

मध्यप्रदेश की प्रतिहार कालीन कला

डॉ. मंजु यादव

प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

सारांशः

प्रस्तुत प्रपत्र में मध्यप्रदेश की प्रतिहारकालीन कला पर प्रकाश डाला गया है। प्रतिहार काल में मध्यप्रदेश के अनेक स्थानों पर वास्तु एवं मूर्तिकला का पर्याप्त विकास कला की दृष्टि से भी बड़ा समृद्ध राज्य है। इस प्रदेश की प्रतिहार कालीन कला में गुप्त कालीन कला का प्रभाव कम होता दिखाई देता है, किन्तु दूसरी ओर मध्ययुगीन विशेषताये प्रभावी दृष्टिगोचर हो रही है। मध्यप्रदेश की प्रतिहारकालीन कला का विकास मध्यभारत, मालवा एवं विन्ध्य-बुन्देलखण्ड क्षेत्र के गहन वन्य क्षेत्र में हुआ। मालवा क्षेत्र में प्रतिहार काल के ग्यारसपुर स्थित माला देवी मंदिर, मानसरोवर के मंदिर, बहोह पठारी का गडरमल मंदिर और सीतागढ़ी (बडोह) तथा सर्वसखमखेडा के मंदिर, आते हैं। ग्यारसपुर की यक्षी मूर्ति भारतीय कला इतिहास में प्रख्यात है।

मध्यप्रदेश की प्रतिहारकालीन कला में शिव के विभिन्न रूपों में चतुर्मुख मुखलिंग मूर्ति, मानवीय रूपों में दक्षिणामूर्ति वीधाधर, नटराज उमामहेश्वर, लकुलिस, भैरव, सदाशिव कल्याण सुन्दर मूर्ति और अजएकपात जैसे रूप की मूर्तियाँ प्रमुख हैं। विष्णु की स्थानक, शयन और आसन मूर्तियों के अतिरिक्त त्रिविक्रम, वराह, वामन और नृसिंह रूप की मूर्तियाँ मिलती हैं। लक्ष्मीनारायण कृष्णलीला का अंकन भी प्रतिहार कला में

Article Publication:

Published online on: 30/12/2024

Corresponding Author:

डॉ. मंजु यादव

सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

©Sadanlal Sanwaldas Khanna Mahila Mahavidyalaya



Scan For Paper

मिलता है। शाक्त मूर्तियों में मातृकाओं का अंकन प्रतिहार कला में दृष्टिगोचर होता है। जैन तीर्थंकरों में ऋषभनाथ, सुपार्श्वनाथ, शांतिनाथ, नेमनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर का अंकन भी है।

प्रमुख शब्द: प्रतिहार, महेन्द्रपाल, महीपाल, ग्वालियर, ग्यारसपुर

भूमिका

मध्यप्रदेश वन संपदा, खनिज संपदा, पुरातात्विक दृष्टि से एक समृद्ध राज्य है। अपनी मध्यवर्ती स्थिति के कारण यह प्रदेश सभी दिशाओं से आने वाले प्रभावों को आत्मसात करता है और उत्तर एवं दक्षिण के मध्य राजनीतिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के सेतु के दायित्व का भी निर्वाह करता रहा है। मानव संस्कृति के उदय से लेकर मध्यकाल तक चित्रकला, मूर्तिकला और अन्याय कलाओं की परम्परा का साक्ष्य इस प्रदेश की बिखरी हुई बहुसंख्यक कलाकृतियों में दृष्टि गोचर होता है।

प्रतिहार वंश

पूर्व मध्यकाल लगभग सातवीं सदी तक मध्यप्रदेश के विभिन्न अंचलों में अलग-अलग राजवंशों ने राज किया। इनमें सर्वप्रथम स्थान प्रतिहारों का है। जिन्होंने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी तथा अरब आक्रमणों से देश में अपना प्रतिहार नाम को सार्थक किया था। प्रतीहार वंश का मध्यप्रदेश के उज्जैन क्षेत्र से गहरा सम्बन्ध है। कालान्तर में इसी शाखा के शासक नागभट्ट द्वितीय ने उत्तर भारत के तत्कालीन राजनीतिक गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र कान्यकुब्ज अर्थात् कन्नौज पर अधिकार करके समस्त उत्तर भारत पर प्रतिहार साम्राज्य स्थापित किया। उस वंश का सबसे प्रतापी राजा मिहिर भोज (836-885 ई.) था। उसका प्रतिहार साम्राज्य के इतिहास में महत्वपूर्ण यागदान है। उसने अपने साम्राज्य की प्रभुसत्ता की स्थापना दो अंचलों गुर्जरात्र और कालजंर मंडल में की। मिहिरभोज का पुत्र और उत्तराधिकारी महेन्द्रपाल प्रथम (885-915 ई.) था। महीपाल के सवंत 974 के असनी प्रस्तर अभिलेख में उसके पिता का नाम फ्लीट 1 ने महिषपाल' पढ़ा है। कीलहार्न² ने फ्लीट के पाठ का समर्थन करते हुए महिषपाल' को महीपाल के पिता का

अन्य नाम बताया है। पुरी 3 ने भी फ्लीट के पाठ को सही माना है, किन्तु 'महिषपाल' को महीपाल का पिता न बताकर उसे महीपाल का ही अन्य नाम माना है, परन्तु श्रीवास्तव ने उत्तर प्रदेश में फतेहपुर की नगरपालिका के कार्यालय परिसर में स्थित मूल अभिलेख को देखकर फ्लीट के 'महिषपाल' पाठ को संशोधित करते हुए 'महेन्द्रपाल' माना है। और यह भी कहा है कि फ्लीट ने अभिलेख का 'स्याही-छाप' पढ़ा था जिस में स्याही फैल जाने के कारण पाठ में त्रुटि हो गयी थी। अतः फ्लीट के त्रुटिपूर्ण 'महिषपाल' पाठ पर आधारित कीलहार्न और पुरी का मत स्वतः खण्डित हो जाता है।

महीपाल के असनी अभिलेख में उसके पिता महेन्द्रपाल और स्वयं महीपाल के लिए 'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' उपाधि उत्कीर्ण है, जिससे उनकी राजनीतिक स्थितियों का पता चलता है। संस्कृत के प्रसिद्ध कवि राजशेखर ने महेन्द्रपाल के गुणों का वर्णन करते हुए उसे रघुवंशियों में श्रेष्ठ एवं अपना शिष्य बताया है।⁵

आपन्नार्तिहरः पराक्रमधनः सौजन्यवाराणिधि

स्त्यागी सत्यसुधाप्रवाह शशभृत्कांतः कविनां मतः ।

वर्ण्यं वा गुणरत्नरोहणगिरेः किं तस्य साक्षादसौ

देवो यस्य महेन्द्रपाल नृपतिः शिष्यो रघुग्रामणीः ॥

इसी क्रम में राजशेखर ने प्रचण्ड पाण्डव (बालभारत) में महीपाल की विजयों का वर्णन करते हुए लिखा है कि उसने मुरलों, मेकलों, कलिंगों, कुलूतो और रमठों को पराजित किया -⁵

नमितमुरलमौलिः पाकलो मेकलानां

रणरणितकलिंगः केलिकृत्केरलन्द्रैः।

अजनिजितकुलूतः कुन्तलानां कुठारः

हठहृतरमठश्रीः श्रीमहीपालदेवः ॥

को महीपाल के पिता का अन्य नाम बताया है। पुरी 3 ने भी फ्लीट के पाठ को सही माना है, किन्तु 'महिषपाल' को महीपाल का पिता न बताकर उसे महीपाल का ही अन्य नाम माना है, परन्तु श्रीवास्तव ने उत्तर प्रदेश में

फतेहपुर की नगरपालिका के कार्यालय परिसर में स्थित मूल अभिलेख को देखकर फ्लीट के 'महिषपाल' पाठ को संशोधित करते हुए 'महेन्द्रपाल' माना है। और यह भी कहा है कि फ्लीट ने अभिलेख का 'स्याही-छाप' पढ़ा था जिस में स्याही फैल जाने के कारण पाठ में त्रुटि हो गयी थी। अतः फ्लीट के त्रुटिपूर्ण 'महिषपाल' पाठ पर आधारित कीलहार्न और पुरी का मत स्वतः खण्डित हो जाता है। इससे प्रतिहार साम्राज्य के विस्तार का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इस संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि महेन्द्रपाल के शासनकाल में राजशेखर के 'बालरामायण' नाटक का मंचन किया गया था और महीपाल के समय में 'प्रचण्ड-पाण्डव' अर्थात् 'बालभारत' का। इससे प्रतिहार काल में राजनीतिक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों का पता चलता है।⁷

प्रतिहार वंश की उत्पत्ति लक्ष्मण से मानी जाने के कारण राजशेखर ने 'बालरामायण' में श्रीराम को लंका से अयोध्या वापस आते समय वाल्मीकि और कालीदास से भिन्न मार्ग का वर्णन करते हुए प्रतिहार (रघुवंशी) शासको की राजधानी कान्यकुब्ज भी पहुंचा दिया है।⁸ और इसे शंकर की जटा की माला गंगा के समान महापवित्र भी बता दिया है⁹ -

इदं द्वयं सर्व महापवित्रं परस्परालंकणैक हेतुः।

पुरं च हे जानकि कान्यकुब्जं सरिच्च गौरीपतिमौलिमाला॥

इससे स्पष्ट है कि हर्ष के बाद पुनः एक बार महेन्द्र पाल के समय में कन्नौज नगर राजनीतिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का भारत के अन्य प्रदेश के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया था। सौराष्ट्र से लेकर उत्तरी बंगाल के पहाड़पुर तथा नेपाल की तराई क्षेत्र तक चतुर्दिक विस्तृत प्रतिहार साम्राज्य राजनीतिक चरमोत्कर्ष पर तो पहुंच ही गया, उसके सुसंगठित स्वरूप का लाभ प्रत्येक प्रकार की उन्नति में अभिव्यक्त हुआ। प्रतिहार काल में मध्यप्रदेश के अनेक स्थानों पर वास्तु एवं मूर्तिकला का पर्याप्त विकास कला की दृष्टि से भी बड़ा समृद्ध राज्य है। इस प्रदेश की प्रतिहार कालीन कला में गुप्त कालीन कला का प्रभाव कम होता दिखाई देता है, किन्तु दूसरी और मध्ययुगीन विशेषताये प्रभावी दृष्टिगोचर हो रही है।

प्रतिहारकालीन कला केन्द्र

मध्यप्रदेश के विस्तृत क्षेत्र में पाये जाने वाले प्रतिहारकालीन कला केन्द्रों को क्षेत्रीय आधार पर दो प्रमुख भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

1. मध्यभारत क्षेत्र के कला केन्द्र (गोपांचल और चम्बल का क्षेत्र)
2. मालवा (विदिशा) क्षेत्र के कला केन्द्र

मध्यभारत क्षेत्र में कला केन्द्र - मध्यप्रदेश क्षेत्र का प्रतिहारों के शासन काल में महत्वपूर्ण स्थान था। गोपांचल के गोपाद्रि दुर्ग की उनके साम्राज्य की संरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका थी, वहीं कलात्मक, गतिविधियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। इनमें प्रमुख कला केन्द्र नरेश, अमरोल, तेली का मन्दिर, चतुर्भुज मंदिर ग्वालियर, मुरैना जिले का बंटेस्वर मंदिर, भिंड जिले के डोंग और खरेट के मंदिर, शिवपुरी जिले में स्थित सेसई का सूर्य मंदिर, तेरही का पार्श्वनाथ मंदिर और महुआ का शिव मंदिर और गुना जिले में स्थित इंदौर का भग्न शिव मंदिर आते हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र के वैष्णव, शैव, सूर्य एवं जैन आदि सम्प्रदायों के सबद्ध मंदिरों एवं मूर्तियों का निर्माण हुआ।

मालवा क्षेत्र का कला केन्द्र (विदिशा जिला) - मालवा क्षेत्र का प्रतीहार वंश के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। यही से ये कन्नौज में स्थापित हुए थे। इस क्षेत्र में विदिशा जिला प्रतीहार कला का महत्वपूर्ण केन्द्र था। इस जिले में स्थित ग्यारसपुर स्थित माला देवी मंदिर तथा मानसरोवर के मंदिर आते हैं। इसके अतिरिक्त बहोह पठारी का गडरमल मंदिर और सीतागढ़ी (बडोह) तथा सर्वसखमखेडा के मंदिर आते हैं। ग्यारसपुर प्रतीहार कला में अपनी अप्रतिम यक्षी मूर्ति के लिए भारतीय कला इतिहास में प्रख्यात है। मध्यप्रदेश के कला केन्द्रों में विकसित प्रतीहार कला की प्रमुख विशेषतायें इस प्रकार हैं:-

1. धार्मिक प्रभाव - मध्यप्रदेश की प्रतिहारकालीन कला में धार्मिक प्रभाव की भावना दिखाई देती है। यही कारण है कि सभी धर्मों के मंदिरों (शैव, वैष्णव, शाक्त, सूर्य और जैन) और मूर्तियों का व्यापक स्तर पर निर्माण हुआ। शिव के विभिन्न रूपों में चतुर्मुख मुखलिंग मूर्ति, मानवीय रूपों में दक्षिणामूर्ति (बटेसर), जरामठ तथा अमरोल वीधाधर शिवमूर्ति भतूरा रामवन संग्रहालय सतना, नटराज (ग्वालियर संग्रहालय) उमामहेश्वर, लकुलिस (बटेसर), भैरव (जरायमठ), सदाशिव पठारी “कल्याण सुन्दर मूर्ति (बटेसर)” और अजएकपात जैसे रूप की मूर्तियाँ प्रमुख हैं। विष्णु की स्थानक, शयन और आसन मूर्तियों के अतिरिक्त

त्रिविक्रम, वराह, वामन और नृसिंह रूप की मूर्तियाँ (नरेसर, बटेसर, बाँधवगढ, वारावली, रामेश्वर) मिलती है। आसन मूर्तियों में योगासन गरूडासीन (बटेसर, ग्वालियर, वारावली, बड़ोह, महुआ) आदि, लक्ष्मीनारायण (बड़ोह, पठारी तथा कलंजर) आदि रूपों में मिलती है। कृष्णलीला का अंकन भी प्रतिहार कला में मिलता है। शाक्त मूर्तियों में मातृकाओं का अंकन प्रतिहार कला में दृष्टिगोचर होता है। इसके साथ ही महिषमर्दिनी और चामुण्डा का अंकन भी हुआ है। लक्ष्मी का अंकन भी प्रतिहार कला में है। सूर्य, रेवन्त, नवग्रह, दिक्पाल, (इन्द्र, अग्नि, वन, नृमूर्ति, कुबेर, ईशान) आदि का अंकन मिलता है। जैन तीर्थंकरों में ऋषभनाथ, सुपार्श्वनाथ, शांतिनाथ, नेमनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर का अंकन भी है। यक्षियों में चक्रेश्वरी, अम्बिका आदि की मूर्तियाँ मिलती हैं। गणेश और कार्तिकेय की मूर्तियों का भी निर्माण मध्यप्रदेश के प्रतिहारयुगीन शिल्प में हुआ है। इस प्रकार साम्प्रदायिक सद्भाव का आभाव प्रतिहारकालीन कलाकृतियों में हुआ है।

2. सौन्दर्य भाव:- मध्यप्रदेश की प्रतिहारकालीन मूर्तियों में मध्ययुगीन मूर्तियों के सादृश्य शून्यता युक्त मुख मुद्रा और कठोर वर्तुल रेखाओं का लेश मात्र भी भाव नहीं है। इनमें गुप्त कालीन मूर्तियों के समान आभा मंडल, मृदुता और निष्कलंक सौन्दर्य स्पष्ट दिखाई देता है। प्रतिहार शिल्पियों ने गुप्त मूर्तिकला की सभी विशेषताओं का पालन किया है, जिसके अन्तर्गत स्वाभाविक और सौम्य शरीर रचना और विभिन्न भाव की अभिव्यक्ति में सहजता दृष्टव्य है।¹⁰ इन मूर्तियों में विवरणों, तालमानों और अनुपातों की शुद्धता पर बल दिया गया है। मूर्तियों को विभिन्न मुद्राओं और स्वरूपों में बनाया गया है जिनमें कपोल और ठुड्डी जैसे भागों को पूरी स्पष्टता के साथ दर्शाया गया है। प्रतिहार मूर्तियों में मनमोहक शारीरिक रचनाएं एवं अवयवों की अनुपातिक योजना सर्वत्र दिखाई देती है।

3. मध्ययुगीन तत्वों का प्रभाव - मध्यप्रदेश की प्रतिहार कालीन मूर्तियों में विभिन्न देव, अप्सरा और मानवीय मूर्तियों के आवश्यकतानुसार, अलंकरणों के प्रति पहले की अपेक्षा रूझान की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। आरंभिक मूर्तियों में वस्त्राभूषण अधिकतर संयमित और रुचिकर है जबकि परवर्ती मूर्तियों में अलंकरणों पर अधिक जोर दिया जाने लगा। अलंकारिक दृष्टि के कारण मूर्तियाँ आकर्षक और भव्य हो गयी हैं किन्तु उनमें गुप्तकालीन मूर्तियों की सहजता का क्रमशः अभाव होता गया। प्रतिहारकालीन मूर्तियों

में क्रमशः मध्ययुगीन मूर्तिकला के तत्वों का प्रभाव बढ़ता गया और निर्माण में हृदय के स्थान पर बुद्धि का अधिक प्रयोग किया गया।” इसी कारण से इस काल की मूर्तियां शैलीगत दृष्टि से श्रेष्ठ और लावण्यमयी पायी गई है। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण ग्यारसपुर से प्राप्त यक्ष की मूर्ति है।

4. भाव-भंगीमा - मध्यप्रदेश की प्रतिहार मूर्तियों में भाव पक्ष को प्रमुख रूप से व्यक्त किया गया है। अवसारानुकूल कलाकारों ने मूर्तियों में दया, शान्ति, मृदुता, संकोच, अध्यात्मिक, दिप्ति और ऐन्द्रिकता के भावों की स्वाभाविक अभिव्यंजना दर्शाया गया है। ग्यारसपुर की सुरसुन्दरी मूर्ति में ऐन्द्रिकता और उल्लास का भाव पूर्ण रूपेण स्पष्ट दिखाई देता है। आकृतियों की आकर्षक शरीर रचना, मुख-मुद्रा तीखी भंगीमा और वस्त्राभूषणों से आसक्ति का भाव प्रकट होता है। विश्वरूप विष्णु में व्यापकता का भाव प्रतिकात्मक रूप से सहज ही दृष्टिगोचर होता है।¹¹

5. मूर्ति एवं शिल्प कला - मध्यप्रदेश की प्रतिहारकालीन मूर्तिकला में मंदिरों के विभिन्न भागों की मूर्तियाँ के अलंकरण से सिरदल पर बनी गरूड़ मूर्तियों के हाथों में लहराते हुए नाग द्वार शाखाओं पर फैले दिखाए गये हैं। इनमें प्रमुख भद्र भागों पर प्रेक्षणिकाओं में बनी गणेश, कार्तिकेय, लकुलीश, सूर्य और पार्वती आदि की मूर्तियाँ हैं। कालान्तर में मंदिरों की मूर्ति सज्जा में अनेक नये अंकनों की स्थापना की गई। तदनुसार गणेश, कार्तिकेय, उमा आदि के अतिरिक्त अष्टदिक्पालों की मूर्तियों का भी समावेश हुआ। इन्दौर के शिव मंदिर में इनकी स्थापना है। नचना के चर्तुमुख महादेव मंदिर में भी दिक्पाल मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं।

6. नारी अंकन - भारतीय कला में नारी की भाव भंगीमाओं को शिल्प कला के माध्यम से दर्शाया गया है। मध्यप्रदेश की प्रतिहार मूर्तिकला में नारी अंकन के सुन्दर उदाहरण यक्षी मूर्तियों में दिखाई देते हैं। इनमें अंगों की कोमलता, आकर्षण और सौन्दर्य पर विशेष बल दिया गया है। इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण ग्यारसपुर से प्राप्त सुर-सुन्दरी की मूर्ति में दृष्टिगोचर होता है। इसकी नाभिदर्शना मूर्ति में यक्षी की मांसल काया अत्यन्त आकर्षक और भंगीमा युक्त है जिसे तरंगित वल्लरी के समान लहराती हुई दिखाया गया है। यह नारी की शारीरिक कोमल और आकर्षक सौंदर्य तथा उसके सौम्य भाव को व्यक्त करती है। यह प्रतिहार नारी मूर्ति की अप्रतिम कलाकृति है।

7. मन्दिर और मूर्तियों के संबंध - मंदिर निर्माण की बहुतायत के कारण प्रतीहार काल में मूर्तियों का संबंध मंदिरों से अधिक हो गया। यह अन्योन्याश्रित सम्बन्ध में मध्यप्रदेश की प्रतिहार मूर्तिकला में स्पष्ट दिखाई देता है। प्रतिहार कला में मूर्तियां मंदिरों का स्वभाविक अंग प्रतीत होती है तथा उनका संयोजन भी इस युग की कला में दक्षता के साथ किया गया। स्वतंत्र मूर्तियां गर्भगृह में दृष्टिगोचर होती है।

8. मूर्ति कला में पर्यावरण की झलक - मध्यप्रदेश की प्रतीहारकालीन कला का विकास मध्यभारत, मालवा एवं विन्ध्य-बुन्देलखण्ड क्षेत्र के गहन वन्य क्षेत्र में हुआ। मूर्ति अलंकरण अभिप्रायों में कालान्तर में क्षेत्रीय वनस्पतियों, लता-पुष्पों, वृक्षों तथा पशुओं का भी अंकन मिलता है। नदियों का मानवीय रूप में अंकन हुआ है। समुद्र मंथन की कथा में समुद्र का अंकन मिलता है। मानव अंकन के बाद कला में पशुओं एवं वनस्पतियों का उपयोग शिल्पी ने सज्जा तथा देव वाहनों के रूप में किया है। इस प्रकार कला में समकालीन वन्य जीवन एवं भौगोलिक पर्यावरण की झलक दिखाई देती है। मध्यप्रदेश की परवर्ती मूर्तिकला में प्रतीहार का गहरा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। चन्देल कला पर प्रतिहार कला की गहरी छाप दिखाई देती है। शैली और लक्षण दोनों की स्तरों पर यह प्रभाव स्पष्टता से देखा जा सकता है। इसके साथ परमार, कच्छपघात, कलचुरि (त्रिपुरी और रतनपुर) कला पर भी प्रतीहार कला की छाप दिखाई देती है। प्रतिहार शैली का व्यापक प्रभाव मध्यप्रदेश की आंचलिक मध्ययुगीन कला में प्रतिबिम्बित होता है।

इस प्रकार प्रतिहार कला के विकास में मध्यप्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान है। इस काल की कला में कतिपय श्रेष्ठशिल्प कृतियों का निर्माण हुआ जो न केवल प्रतिहार कला की सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ हैं वरन् भारतीय कला में उन्हें गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है।

संदर्भ:-

- फ्लीट. जे.एफ.: असनी इन्स्कृप्शन ऑफ महीपाल, इण्डियन एण्टिक्वेरी, जिल्द 16 जून 1887, पृ. 173-175
- कीलहार्न, एफ.: सीयादोनी स्टोन इन्स्कृप्शन, इपिग्राफिया इण्डिका, जिल्द 1, पृ. 171

- पुरी, बी.एन.: द हिस्ट्री ऑफ द गुर्जर प्रतिहार राज, 1975, पृ. 93
- श्रीवास्तव ओम प्रकाशलाल: महीपाल देव का असनी अभिलेख पुनर्विवेचन, इतिहास एवं पुरातत्व के नवीन आयाम बी.आर, पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली, 2021, पृ. 81-84
- बालरामायण, 1/18, बालभारत 1/11
- प्रचण्ड-पाण्डव (बालभारत) 1/7
- श्रीवास्तव, सत्यप्रकाश, राजशेखर और प्रतिहार शासक, मीरायन, मीरा स्मृति संस्थान चित्तौड़गढ़, सितम्बर-नवम्बर 2022, पृ. 42-43
- श्रीवास्तव, सुलभ, रघुवंश और बाल रामायण में वर्णित श्रीराम का लंका से अयोध्या आने का मार्ग जर्नल ऑफ गगनाथ, झा, जिल्द 69 (1-4) 2014, पृ. 23-30
- बालरामायण, 10/89
- अली, रहमान, प्रतिहार आर्ट इन इण्डिया, पृ. 66
- मिश्र, रमानाथ, भारतीय मूर्तिकला, पृ. 142

